प्रकाशक
श्री माँ—मन्दिर
मंडी धनौरा, मुरादाबाद

प्रथम बार मई सन् १९५१ ई०

मूल्य आठ आना

मुद्रक—
संगम प्रेस
कीटगंज, प्रयाग

❋ अन्तिम गीत ❋

हे ! विश्वम्भर हे ! जग रक्षक,
जीव मात्र के जीवन दाता ।
'दीनबन्धु' करुणा के सागर,
सकल विश्व के भाग्य विधाता ॥
जन्म दिया तूने ही जग को,
तुझ में ही जग लय हो जाता ।
जीवन मरण महा माया का,
फिर क्या भेद समझ में आता ॥
ब्रह्म सत्य जग मिथ्या है तो,फिर सुख का आभास कहाँ है ।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ॥
शून्य शून्य कहती है दुनियाँ,
शून्य महा 'विस्तार' बन गया ।
नहीं शून्य है ! कुछ भी तो फिर,
यह कैसे ? संसार बन गया ॥
किसकी कृपा कोर से पल में ।
निराधार ! आधार बन गया,
पंच तत्व मिल गये ! परस्पर,
'मानव' का आकार बन गया ॥
शून्य विश्व है, विश्व शून्य है, मृत्यु का परिहास कहाँ है ।

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत !!

'सर्वप्रथम' मरने वाले पर,
क्या ? जाने क्या बीती होगी।
यह कब सोचा होगा उसने,
ऐसी कभी 'अनीती' होगी॥
'सुधामयी' जीवन की प्याली,
हाय ! अचानक रीती होगी।
मरकर भी ! उसकी अभिलाषा,
कहीं विचारी जीती होगी॥

खोज रही होगी जीवन का, मिलता नहीं निकास कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है॥

उसे देखने ! आये होंगे,
कितने ही जाने पहिचाने।
क्या ? देखा होगा जब उसके,
रहे न होंगे 'होश' ठिकाने॥
देख इन्द्रियाँ शिथिल विचारा,
जीव लगा होगा घबराने।
बोल उठा होगा मृत्यु की
'परिभाषा' कोई अन जाने॥

अब तो यह मर चुका देख लो, चलती इसकी सास कहाँ है॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ! कौन? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत।'

देखा दशा! उसकी था ऐसा
कौन? न जो घबराया होगा।
एक बार तो पत्थर का दिल,
भी 'आँसू' भर लाया होगा।।
धन, बल, विद्या वैभव पर,
फिर क्या? कोई इतराया होगा।
तभी! किसी ने मानव जीवन,
'क्षणभंगुर' बतलाया होगा।।

कोई भी मर जाय! मृत्यु का होता हृदय उदास कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है।।

कितनों ही ने मृत्यु स्वप्न में,
उसी रात लख पाई होगी।
कितनों ही को अरे! जागने,
से पहिले ही! आई होगी।।
देख नित्य मरने वालों को,
सब दुनियाँ घबराई होगी।।
'जग मृत्यु का भोजन' है तब,
समझी यह 'सच्चाई' होगी।।

जिसे छोडदे मृत्यु! विश्व में, ऐसा कोई 'भास' कहाँ है।।

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ! कौन? सुनेगा मेरा अन्तिम गीत।
मोह त्याग कर ' तभी किसी ने,
सर्व प्रथम सर्वस तज डाला।
सत्य' खोजने प्रभु ही जाने,
कहाँ गया होगा मतवाला॥
लेकर किसका नाम जपी होगी,
मन ही मन 'अगनित माला।
हुआ पूर्ण आनन्द स्वयं जब,
उसके उर में हुआ उजाला॥
मृत्यु ही जीवन है जीवन, मृत्यु का उच्छ्वास कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है॥
कितने ही ! युग बीत गये पर,
अब तक आया।

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ! कौन? सुनेगा मेरा अन्तिम गीत।
स्वागत हो आगमन किसी का,
हो चाहे! दुख पूर्ण विदाई।
'महारुदन' का उसे नहीं दुख,
बजती हो! चाहे शहनाई॥
बालक वृद्ध युवा युवती क्या,
लाख करें! कोई चतुराई।
ऐसा कौन? हुआ है जग में,
किसे बोल कब मृत्यु न आई॥
मृत्यु देखती! आयु किसी की, वर्ष पांच 'पचास' है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है॥
वर्षा, आंधी, सर्दी गर्मी,
प्रातः संध्या क्या? दोपहरी।
काल चक्र की चाल प्रबल है,
धीमी हुई! कहाँ कब ठहरी॥
सुखद समीरण प्रति पल सुनती,
रहती है उसकी स्वर लहरी।
पाया जब 'संकेत' जीव को,
सुला दिया 'निद्रा' में गहरी॥
मृत्यु के आगे कब किसकी, निकली बोल 'उसास' कहाँ है।

अन्तिम गीत

किसे ! सुनाऊँ कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥
निर्धन समझ ! किसे कब छोड़ा,
'नरपतियों' के लुटे खजाने।
उसको आना है ! आने के,
हो जाते हैं 'लाख' बहाने ॥
मृत्यु ! परिवर्तन है तन का,
तज देते ज्यों वस्त्र पुराने।
जीव चला जाता है अपना,
और नया संसार बसाने ॥
गया अनेकों बार ! जायगा, उसका 'प्रथम' प्रवास कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन मे विश्वास कहाँ है ॥
दया, क्षमा, संतोष, प्रेम का,
वह दम ! भरने वाले देखे।
बिना स्वार्थ के जीव मात्र की,
विपदा हरने वाले देखे ॥
मानवता के लिये ! अनेकों,
'हंसकर' मरने वाले देखे।
औ कितने ही ! मुर्दों को भी,
जीवित करने वाले देखे ॥
पर 'मूसा' का असा कहाँ अब, ईसा का वह 'क्रास' कहाँ है।

अन्तिम गीत

"किसे सुनाऊं ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥

जिसे नहीं, कोई ? अपनाये,
उसको भी, वह अपनाते हैं।
जिनका होता है विशाल उर,
बड़े वही तो, कहलाते हैं ॥
'समदर्शी' के लिये ! भेद क्या,
सभी बराबर बन जाते हैं।
'क्षुद्रहृदय' यह दीपक तारे,
अंधकार को ठुकराते है ॥

तम को 'अतम' बनाने वाला, ऐसा पूर्ण प्रकाश कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ हैं ॥

दूर गया वह ! पास न आया,
कोई ! दुखी, कहीं जब चीखा।
यही ! देखता फिरा प्रेम का,
अनुभव हो मुझसे भी तीखा ॥
पीउ ! पीउ ! कर गिरा गोद में,
उसको मौन विकल जब दीखा।
मैं वह प्यासा हूं ! चातक ने,
प्यासा रहना मुझ से सीखा ॥

"स्वाति-बिन्दु' से बुझजाये जो, ऐसी मेरी 'प्यास' कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥

मानव जीवन पाकर भी क्यों,
प्रभु की महिमा ! हाय न जानी ।
अब मेरी 'मनमानी' होगी,
खूब करी ! तू ने मन मानी ॥
मृत्यु बोली ! खेल खेल में
आयु बिताई क्यों ? अज्ञानी ॥
सभी बराबर ! इक्का दुक्का,
क्या ? गुलाम क्या राजा रानी ॥

साथ हमारे खेल अभागे, खेला तू ने 'ताश' कहाँ है ।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ॥

तू मेरे पीछे ! जीवन भर,
रही भटकती ! बन कर छाया ।
वैसी ही ! बन गई क्षणिक में,
जैसी हुई 'हमारी' काया ॥
समझ गया ओ ! सखीसाथिन,
झूंठी सभी, जगत की माया ।
निसकोच ! लिपट जा उर से,
'प्रेयसि' आज सुअवसर आया ॥

मृत्यु सहचरी ! डाल गले में, वह तेरी 'यम पाश' कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥

भरी सभा में ! देखी गुरुता,
चली किसी की खूब कतरनी ।
बतलाया जग को ! जीवन भर,
अपनी करनी अपनी भरनी ॥
आज मौन ! आँखों में आँसू,
पार उतरनी क्या ? वैतरणी ।
मृत्यु को लख ! प्रभु ही जाने,
तुतलाये क्यों ? वैयाकरणी ॥

भूल गये हा ! शुद्ध उच्चारण, अब वह पद विन्यास कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो; जीवन में विश्वास कहाँ है ॥

घटा उठी ! सब ओर ! आजक्यों,
घुमर घुमर कर घन घहराया ।
चमक रही है चंचल चपला,
'पुरवैया' ने साथ निभाया ॥
आप मरे ! जग परलय होती,
बूंद ! बूंद ! को था तरसाया ।
अंगारों में 'जीवन' बीता,
अन्त समय क्यों जलधर आया ।

वर्षा ऋतु में ! अरे बावले, होता आक 'जवास' कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत !!

क्या कुछ नहीं किया है तूने,
खूब बजाया ! अपना बाजा ।
उलझ रही है ! जीवन गुत्थी,
सुलझानी हो तो सुलझा जा ॥
रही शेष अब क्या ? अभिलाषा,
चुपके से आकर बतलाजा ।
मेरी ! आशाओं के पंछी,
क्षण भर को धरती पर आजा ॥

जीवन दीप ! बुझा अब तेरे, उड़ने को 'आकाश' कहाँ है !
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ॥

जितनी उजली आज न उतनी,
देखी कभी 'क्षितिज' की रेखा ।
नहीं रही क्या ? अब जीवन की,
सब पूरी ! हो गई 'जुलेखा' ॥
अरे ! किसी का दोष नहीं है,
औरों का क्यों ? करूँ परेखा ॥
अत समय अपनों का मैंने,
जब ऐसा 'अपनापन' देखा ।

सब कहते थे ! यह मिट्टी है, फूंको इसमें 'सांस' कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ! कौन? सुनेगा मेरा अन्तिम गीत।।

चली 'हटीली' अरे! महल में,
कहना इसने फंद नहीं है।
तेरी 'एक' नहीं चलने की,
झगड़े में आनन्द नहीं है।।
जो मेरे 'शुभचिन्तक' तुझ सा,
कोई भी मतिमंद नहीं है।
मुझसे भागा! रसने से क्या?
उसका तो मुख बंद नहीं है।।

मैं ही तो उपहास किये हूँ, मृत्यु का 'उपहास' कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है।।

भूल गया सब राग रंग को,
ऐसा लगा 'हृदय' पर धक्का।
क्या? होता है! यही देख,
रह गया अचानक हक्का बक्का।।
नयन रसीले, मधुर अधर का,
मैंने! सदा 'सुधारस' चक्खा।
फिर क्यों? जीवन संगिनि तूने,
जीवन भर! धोखे में रक्खा।।

अन्तिम क्षण रोने बैठी हा,! वह तेरा मृदुहास कहाँ है।।

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ। कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥
परख चुका हू ! नये नहीं हैं,
अरे ! सभी हैं देखे भाले।
ऊपर से ! जितने उजले है,
भीतर से ! उतने ही काले ॥
मुझे घृणा है कलुषित जग से,
अब तो हे ! भगवान उठाले।
जब मैं दुनियाँ छोड चला, तब,
क्यों ? आये यह दुनियाँ वाले ॥
ऐसे 'निष्ठुर' जग से मुझको, मिलने का अवकाश कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ॥
जिसे नहीं ! मैं पढ पाया क्या,
पढ 'विधना' का लेख रहे हो।
अरे ! अशुभ को शुभ करते क्या,
मिटा भाग्य की रेख रहे हो ॥
घूम रही ! जिसपर दुनियाँ क्या,
निरख अलौकिक मेख रहे हो।
मेरे मुंह से 'कफन' हटाकर,
बतलादो ! क्या ? देख रहे हो ॥
अरे किसी का ! अच्छा होता, करना पर्दा 'फाश' कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ! कौन? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥
भव सागर में! खाते पीते,
खाते सब ही को! गोते हैं।
मिट्टी में सब, मिल जाते जो,
मिट्टी से! पैदा होते हैं ॥
'ऋणबंधी' संसार! वृथा ही,
अज्ञानी! धीरज खोते हैं।
मात पिता पत्नी सुत भ्राता,
सब अपने सुख को रोते हैं ॥
जो कुछ था दे चुका तुम्हारा, अब सुख मेरे पास कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ॥
जीवन भर! कह सके न जो कुछ,
'निसंकोच' सभी कह डालो।
कितनी दूर! न जाने उड़ना,
पानी पीलो! दाना खालो ॥
साहस करो! डरो मत वीरन,
जैसे भी हैं! पंख संभालो।
जाओ! मेरे प्राण पखेरू,
और कहीं पर 'नीड़' बनालो ॥
इस उपवन में आग लगेगी, पतझड़ है 'मधुमास' कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ! कौन? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत।।

मुझे और का क्या? करना है,
जब तेरा! ले चुका सहारा।
तेरे सम हे! परमपिता है,
अब शुभचिन्तक कौन हमारा।।
तू मेरा है! मैं तेरा हू,
कभी नहीं! हो सकता न्यारा।
भला बुरा! जैसा जो कुछ हूँ,
मैं भी तो हू 'अंश' तुम्हारा।।

अजर अमर हूँ, आदि अजन्मा, मेरा कभी विनाश कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है।।

ओ! मेरी 'तकदीर' जाग उठ,
अन्त समय है फिर क्यों सोती।
तेरे विना! किसी विध पूरी,
कोई भी 'तदवीर' न होती।।
निर्धनता को! देख देख कर,
मेरी जीवन 'आशा' रोती।
चला गया हा! वैद्य विचारा,
मुझे वताकर 'सच्चे' मोती।।

चने चाव! जिसने दिन काटे, उसको मोती 'रास' कहाँ है।।

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ! कौन? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ।।

साहस कहीं! न घबरा जाये,
पीठ थपक दे! 'शीश' ठोक दे।
जितनी भी हो शक्ति लगा दे,
निष्ठुर मुंह को जरा! खोलदे ।।
यही! परीक्षा का अवसर है,
जैसे भी हो! 'सुधा' घोलदे।
अन्त समय ऐंठी क्यों? जिन्हा,
एक बार तो 'राम' बोल दे ।।

जीवन भर 'माला' फेरी थी, वह मेरा 'अभ्यास' कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ।।

वीर! वीर! कह बहिन रो उठी,
भुजा पकड़ कर! रोया भ्राता।
लिपट चिपट कर! तिरया रोई,
पेट पकड़ कर! रोई माता ।।
देख रहा हूं! दीख रहा अब,
फूटा है सब जग का नाता।
फंसा मोह-ममता, में पागल,
रोता 'हंस' अकेला जाता ।।

आग लगादे! नश्वर जग में, ओ मेरी 'निश्वास' कहाँ है ।।

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊ ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥

सिर पर रख कर पैर ! बिचारे,
सब 'अरमान' हमारे भागे ।
कठ रुधा है, सांस रुकी अब,
टूट गये ! जीवन के धागे ॥
जो कुछ किया वही है ! सन्मुख,
कर्म अकर्म सभी हैं जागे ।
यम के दूत' कहाँ है ! मेरे,
पाप खडे हैं मेरे आगे ॥

पूंछ रहे है ! मुझसे बतला, वह तेरी 'अभिलाष' कहाँ है ।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ॥

मुह देखे की ! अरे प्रीत है,
क्या ? अपनत्व दिखाने आये ।
साथ नहीं ! कोई भी चलता,
अच्छा साथ निभाने आये ॥
'पच-पैडी' भर लौट गये कुछ,
'मरघट' तक पहुँचाने आये ॥
खूब समझता हूँ ! मैं तुमको,
आसू ! वृथा बहाने आये ॥

दुनियाँ की 'आखें' देखी हैं, खोदी मैंने 'घास' कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊ ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ।।

यह परिवर्तन शील जगत है,
नित होता रहता ! परिवर्तन ।
जीवन सफल उसी का जग में,
जिसका होता है उज्ज्वल मन ।।
रमा हुआ है जग तीतल में,
उससे रहित ! नहीं कोई कण ।
विश्वासी को ! हो जाते ,है,
'कंकर' में 'शंकर' के दर्शन ।।

तेरा ही विश्वास नहीं तो, फिर काशी 'कैलाश' कहाँ है ।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ।

अरे ! वही प्रभु का प्यारा जो,
भेद भाव को ! दूर भगाये ।
बाहर के 'आडम्बर' से क्या,
भीतर का ! अज्ञान मिटाये ।।
हाथ 'सुमरनी' बगल कतरनी,
कान फटाये, तिलक लगाये ।
देखा है ! दम्भी, पाखंडी,
शीश मुड़ाये, जटा बढ़ाये ।।

पूंछ रही है 'गंगा' उनसे, मन चंगा 'रैदास' कहाँ है ।।

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥

किसी विकल की निश्चय ही जब,
आंख अश्रु भर लाई होगी ।
उस अधीर के पास धीरता,
आप दौड कर आई होगी ॥
और किसी ने उसके उर में,
अपनी 'झलक' दिखाई होगी ।
सर्वप्रथम ! तव प्रभु की प्रतिमा,
ले 'हरिनाम' बनाई होगी ॥

बड़ा भाग्यशाली था जग में, अब वह 'सगतराश' कहाँ है ।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो जीवन में विश्वास कहाँ है ॥

यही 'कसौटी' है जीवन की,
दुख सुख केवल मन का भ्रम है ।
कर्म किये जा हार न हिम्मत,
वृथा किसी का कभी न श्रम है ॥
जैसा उचित समझता ! वैसा,
करता उसका अटल नियम है ।
आशा वादी होकर जीना,
दुनियाँ मे, सब से उत्तम है ॥

घोर आपदा ! पडने पर भी, मेरी आशा निराश कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ! कौन! सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत।

बूँद बूँद जीवन से जिस दम,
मृत्यु का 'घट' भर जाता है।
जिस दिन जीना यहाँ लिखा है,
कौन बिचारा! मर जाता है॥
अकस्मात क्षण में जीवन पर,
सारा 'नशा' उतर जाता है।
बुरा नहीं है मरना! मरकर,
जीवन और 'निखर' जाता है॥

मर कर नव जीवन जब मिलता, तब जीवन का ह्रास कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है॥

आज याद आ रही! अचानक,
सुखद स्मृति की वह पखुड़ियाँ।
थी कितनी सुन्दर हा! मेरे,
'प्रारम्भिक' जीवन की घड़ियाँ।
यह सोने का समय नहीं! क्यों,
लगा रहे 'आँसू' की झड़ियाँ।
तोड़ रही है! मृत्यु मेरे,
जीवन की सारी हथकड़ियाँ॥

छूट रहा मैं! जग बंधन से! तुमको होश हवास कहाँ है॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ।।

जीवन के दिन बीत गये हैं,
अब मृत्यु की, रात आ गई ।
बिना कहे मैं ! नहीं रहूँगा,
जब 'होठों' पर बात आगई ।।
भला करै भगवान ! देख लो,
कितनी अच्छी 'स्यात' आ गई ।
धन्य भाग्य हैं मेरे शव के,
आगे अरे 'बरात' आ गई ।

मुझे याद आगया अचानक, मेरा 'भोग
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में

रखकर मुझे 'चिता' पर क्षण
फूक दिया हा ! जैसे
फिर धीरे से 'थपकी'
मेरी पीठ ! किसी ने
मैं • समझा 'नवजीवन'
'अगडाई' ली आँख न खो
पडा न रह चुप चाप मरा
मुझे डपट कर ! मृत्यु वो

अभी कर्म है शेष ! पुत्र ने, मारा सिर

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊं ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ।।

छिपा नहीं है ! उससे कोई,
घूम रही है ! मृत्यु घर घर ।
तू कितना ही चाल चाल दे,
कहाँ जायगा ! बतला बचकर ।।
ओ ! अभिमानी एक न मानी,
उड़ा जा रहा क्यों ! तू बे पर ।
बोल कहाँ ! लुकमान अरस्तू,
कौरू ! अफलातून सिकन्दर ।।

चिर परिचित है ! अरे किसी को, करना उसे 'तलाश' कहाँ है ।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ।।

अपने प्रभु से ! मिलने जाता,
मुझको तनिक मलाल नहीं है ।
बीत रहा है पल पल भारी,
फिर भी तुमको ! ख्याल नहीं ।।
जो कुछ लगनी ! मुझे लगेगी,
लगनी तुमको 'हाल' नहीं है,
चाल चलो 'मरघट' की पगलो,
'जनमासे' की ! चाल नहीं है ।।

मैं हर्षित हूं ! अरे बहाते, आँसू क्यों ? उल्लास कहाँ है ।।

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥
धन के चक्कर में पड़ कर मैं,
अरे कौन सा ! खेल न खेला ।
जोड़ा लाख करोड़ साथ में,
चला एक भी, हाय न धेला ॥
समझ नहीं पाया अब समझा,
आई जब मृत्यु की 'बेला' ।
मैं ही नहीं रहूँगा जग में,
लगा रहेगा यूं ही मेला ॥
अच्छा ही था यदि ले लेता, लिया हाय ! सन्यास कहाँ है ।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ॥
हुआ दिवाकर उदय प्रातः को,
सन्ध्या होती ! ढल जाता है ।
महाकाल का ! चक्र प्रबल है,
जीवन का प्रतिपल जाता है ॥
आज गया तो आज न लौटा,
कल आया तो ! कल जाता है ।
अरे ! आज कल करते करते,
सारा समय 'निकल' जाता है ॥
किया न हरि का भजन ओटता फिरता बोल 'कपास' कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊं ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥
रोगी, रंक, कुरूप, मूर्ख, से,
कभी नहीं ! वह नाता तोड़े ।
धन बल विद्या सुन्दरता लख,
नहीं ! किसी से नाता जोड़े ॥
जिसने जन्म लिया है उसको,
फिर कैसे ? वह 'जीता' छोड़े ।
उसे नहीं ! भय प्रेम किसी से,
अटल नियम क्यों विध का तोड़े ॥
मित्र कौन कब हुआ मृत्यु का, दुश्मन कोई खास कहां है ।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ॥
मृत्यु क्या ? है विविध भांति से,
जीव मात्र का 'नियत' समय है ।
जिसमें जीवन छिपा अनिश्चय,
अरे यही ! वह दृढ़ निश्चय है ॥
जीवन कितना मीठा होता,
निःसंदेह 'महासुख' मय है ।
किन्तु यह भी ! शुष्क नहीं है,
अति विशाल उर सरस हृदय है ॥
मृत्यु वह मिसरी है जिसमें, अरे ! बाँस की फांस कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ! कौन? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥
हाथी, घोडे महल, दुमहले,
कैसे सुन्दर! बाग-बगीचे।
ताज तख्त क्या? माल खजाना
क्या? गद्दे कालीन गलीचे ॥
छोड गये! सब सुख के साधन
हाथ 'पसारे' आँखें मींचे।
कितने शाहजहाँ' सोते हैं!
बेसुध इसी ज़मीं के नीचे ॥
"ताजमहल' कह रहा हमारा, वहपिछला इतिहास कहाँ है।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ॥
देख! देख! उनकी हम दर्दी,
आये मुझको! खूब तरेरे'।
पर! बस की कुछ बात नहीं थी,
पडा रहा! मैं 'गर्दन' गेरे ॥
'ठठरी'-गाधी शख बजाया,
खील बताशे' खूब बिखेरे।
निल्हा धुलाकर रख कधे पर,
चले फूकने! मुझको मेरे ॥
अरे विदा में! कभी किसी को, देता कोई त्रास कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत !!

यही एक 'चिन्ता' है मुझको
महा दुखी हूँ 'डर' के मारे ।
पूछेगा प्रभु ! क्या कुछ लाया,
गूर ! किये थे, प्यारे न्यारे ॥
उसने सब कुछ मुझे दिया था,
मैंने खोया ! बिना विचारे ।
मुट्ठी 'बंद' किये आया था,
जाता हूँ ! अब हाथ पसारे ॥

खाली हाथ ! चलो के आगे जाने में शाबाश कहाँ है ।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ॥

वह बैठा ! सब ही के उर में,
प्रति पल जग को जाच रहा है ।
कभी अभी छिपा क्या उससे,
परख झूठ औ सांच रहा है ॥
पाप पुण्य का ! भेद खुलेगा,
क्या ? तू मार कुलाच रहा है ।
'महाकाल' की अरे ! ताल पर,
यह सारा जग 'नांच' रहा है ॥

जहाँ 'घूंस' चलती हो उसका, ऐसा वह 'इजलास' कहाँ है ॥

अन्तिम गीत

किसे सुनाऊँ ! कौन ? सुनेगा, मेरा अन्तिम गीत ॥
किसे ज्ञात ! वह कब आजाये,
आजाये तो ! नहीं टलेगी ।
पछतायेगा ! मृत्यु तेरी,
छाती पर जब 'दाल' दलेगी ॥
किये नहीं शुभ कर्म ! रोयगा,
अभिलाषा जब हाथ मिलेगी ।
कोई साथ न देगा बंदे,
'नेकी' तेरे 'साथ' चलेगी ॥
बिना किये नेकी जीवन का, होता अरे 'विकास' कहाँ है ।
मृत्यु में विश्वास नहीं तो, जीवन में विश्वास कहाँ है ॥
वह रहते ही नहीं ! यहाँ पर,
जो इस जग से 'तरे' हुये हैं ।
खूब तपाये गये ! अन्त को,
सब प्रकार से खरे हुये हैं ॥
उस 'विराट' की अरे डाढ के,
नीचे हैं ! सब डरे' हुये हैं ।
जितने भी हैं ! जीव जगत में,
जीते हैं ! पर मरे हुये हैं ॥
मर मर कर जी उठने वाली, अरी ! जाग जिज्ञास कहो है ॥

अन्तिम गीत

उलझन ही 'उलझन जीवन में, सन्धि कम समाम बहुत है ।
पाप सरल है किन्तु भयंकर, पापी का परिणाम बहुत है ॥

मैंने जग को ! अपना समझा,
यह मेरा 'भोलापन' ही था ।
भीतर तो ! विष हीं विष देखा,
ऊपर से 'अभिराम' बहुत है ॥

प्रभु से ! मिलने की वेला है,
'हर्षित' होकर उड रे 'पक्षी' ।
जीवन में यदि दुख पाया तो,
मरने में 'आराम' बहुत है ॥

जीवन सध्या देख न घबरा,
'मंजिल' पर आ पहुँचा राही ।
अरे बढा चल ! फिर सारी निश,
करने को ! विश्राम बहुत है ॥

मेरे आने ! ही से पहिले,
मुझे ! बुलाने आ बैठी क्यों ?
अरी चली जा ! मौत अभी तो,
करना मुझको 'काम' बहुत है ॥

लेने देने के झगडे में, क्यों तू ? 'विकल' वृथा दुख पाता ।
देने को क्या आँसू कम हैं, लेने को 'हरिनाम' बहुत है ॥